

[Shri P. Shiv Shankar]

is a question of our finding the oil, and, immediately on finding the oil, carrying out exploratory processes. Unfortunately I have had no knowledge of astrology and it is not possible for me to predict about it. On our part, I may say, our Ministry is leaving no stone unturned for the production of crude oil.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY :
I asked you whether in respect of the officer who first detected the leakage, are you going to appreciate his work....

SHRI P. SHIV SHANKAR :
That part of it would certainly be taken care of. I assure the Hon. Member about this : Those who detected and those who repair are doing a yeoman service to the nation itself and their services would certainly be recognised.

12.50 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) PROBLEMS OF SAINIK SCHOOLS IN CHITTORGARH AND NEED TO RUN SUCH SCHOOLS LIKE KENDRIYA VIDYALAYAS

प्रो० निमंला कुमारी शक्तावत (चित्तौड़गढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, देश में 18 सैनिक स्कूल हैं। उनमें से एक मेरे निर्वाचन क्षेत्र चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में है। यह स्कूल रक्षा मंत्रालय के अधीन होते हैं। पर वित्तीय भार राज्य सरकारों पर है। राज्य सरकारें उन्हें केन्द्रीय विद्यालय मानकर अपने विद्यालयों के नियम लागू नहीं करतीं। इन स्कूलों की उपेक्षा करती हैं तथा रक्षा मंत्रालय अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयों को देखते हुए इन्हें राज्य सरकारों पर छोड़ कर निश्चिन्त है। वह केन्द्र जो देश के भावी रक्षा प्रहरियों को तैयार कर रहे हैं, यह काफी

उपेक्षित तथा अभाव और दिक्कतों से घिरे हुए हैं। यहां का विद्यार्थी, क्या अध्यापक और अन्य स्टाफ सभी इस समय उपेक्षित हैं।

चित्तौड़गढ़ सैनिक स्कूल के बच्चों पर खाने का व्यय बहुत ही कम किया जाता है। इसलिए बच्चों को पूर्ण पोषिक तथा स्वास्थ्यप्रद भोजन नहीं मिल पाता। अतः खाने के खर्च को बढ़ाया जाए।

चित्तौड़गढ़ सैनिक स्कूल का रख-रखाव तथा मरम्मत कई वर्षों से नहीं हुई है। यहां पढ़ाने वाले अध्यापकों को न तो केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के समान वेतन मिलता है और न राज्य के सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के समान। पुराने वेतनमान में कोई संशोधन नहीं हुआ, अतः उनका वेतन बहुत ही कम है। उनके वेतनमान को संशोधित किया जावे। उन अध्यापकों के सेवा निवृत्त होने पर पेंशन की व्यवस्था भी नहीं है। आज सभी जगह वेतनमान अच्छे हैं। अतः इस तरह भी अनुशासित तथा अच्छी संस्थाओं में योग्य अध्यापक धीरे-धीरे आना कम हो जायेंगे। अतः वेतनमान में संशोधन तथा पेंशन की व्यवस्था की जाए।

सैनिक स्कूल चित्तौड़गढ़ में नियुक्त चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को पुराने वेतनमान से 75/- रु० माहवार मिलता है अर्थात् 2/50 प्रतिदिन। जब एक साधारण मजदूर को 7/- रु० प्रतिदिन मिलता है। राजस्थान के अन्य सरकारी स्कूलों में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को भी 275/- रुपए और 300/- रुपए मासिक मिलता है।

सैनिक स्कूलों में दोहरी व्यवस्था केन्द्र तथा राज्य की समाप्त करके इन्हें केवल केन्द्रीय विद्यालयों के समान ही केन्द्रीय सरकार देखे। वित्तीय व्यवस्था भी केन्द्र ही करे।